SHRI M. V. KRISHNAPPA : (Chikballapur) : Foreigners came to India for cardamom.

SHRI K. LAKKAPPA : It gives such a beautiful smell. It has got a wide market. As my friend mentioned, Guatemala and Tanzania are in the world market. So, we have to organise our market and export in a proper manner so that we can get the maximum benefit. I would request the Minister to kindly visit the garden area once so that he can understand the problem.

There should be research for evolving alternative uses for cardamom. Otherwise, it will be used only for consumption. If by research other uses could be found then it will fetch a better price and the small growers will be benefited. In that case, even the area under cardamom crop can be extended.

The katte disease is plaguing the cardamom crop in Karnataka. The growers require financial and scientific help to fight this disease. Pesticides should be supplied at concessional rates to poor farmers.

Since a cess is being levied, let us hope that more funds will be spent for developmental activities. Otherwise, the industry will stagnate. I hope the dynamic Minister will take all steps to see that the Cardamom Board is restructured, it functions well and creates a good export market. Please see that proper people are put on the Cardamom Board, not the people who have been always monopolising it.

I want a categorical assurance that the pool marketing system, which alone will root out the monopolies, will be operated by you. I appreciate what the hon. Minister has said and seek permission to withdraw my amendment.

SHRI MOHAN DHARIA : So far as this assurance which is demanded by the hon. Member is concerned, I shall look into it because I always admire the advice that comes from him.

MR. CHAIRMAN : Has the hon. Member the leave of the House to withdraw his amendment?

HON. MEMBERS : Yes.

Amendment No. 1 was, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN : The question is:

"That Clauses 2 and 3 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clauses 2 and 3 were added to the Bill.

MR. CHAIRMAN : The question is:

"That Clause 1, the Enacting Formula and the Title stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI MOHAN DHARIA : I beg to move :

"That the Bill be passed."

MR. CHAIRMAN : The question is :

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

17.42 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION.

MALARIA INCIDENCE IN THE COUNTRY

श्री ओम प्रकाश त्यागी (बहराइच) : मुझे एक विशेष बात कहनी है कि आज देश पर बहुत बड़ा आक्रमण हो रहा है और हमारी सरकार और जनता दोनों इस भयंकर आक्रमण को अनुभव नहीं कर रहे हैं। यह सेनाओं का नहीं अपितु मच्छरों का आक्रमण है। उसकी भयंकरता लड़ाई से ज्यादा है। विदेशी सेनाओं के आक्रमण में जितने आदमी मरते हैं उस से ज्यादा इस बीमारी से घायल और परेशान होते हैं। मैं कुछ आंकड़े आपको देना चाहता हूं। 1952 में मलेरिया के खिलाफ आन्दोलन शुरू हुआ था डब्लू एच ओ के सहयोग से। उस समय देश में इस बीमारी से बीमार लोगों की संख्या, मलेरिया से रोगग्रस्त लोगों की संख्या 7 करोड़ 50 लाख थी। दस साल बाद यानी 1965 में यह संख्या केवल एक लाख रह गई और ऐसा लगता था कि इस देश में मलेरिया स्मालपाक्स की तरह समाप्त हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 1976 में मलेरिया के रोगियों की संख्या 50 लाख हो गई। डब्लू एच ओ

का कहना है कि अगर इसी गति से यह बढ़ता रहा तो दस साल के बाद इस देश में यह संख्या 1 करोड़ 20 लाख हो जाएगा। अगर असम में या तराई के क्षेत्रों में यह तेजी से बढ़े तो आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए। परन्तु मैं कुछ आंकड़े आपको देना चाहता हूं। दिल्ली जो कि मलेरिया प्लेस नहीं है यहां हमारी लोकप्रिय सरकार और हमारी जनता की लापरवाही किस रूप में चल रही है इसके आंकड़े मैं देता हूं। 1971 मे मलेरिया से ग्रस्त लोगों की संख्या 3852 थी, 1972 में 3562 और 1973 में 3521, लेकिन 1975 में यह बढ़ कर 37879 हो गई और 1976 में 493300। अप्रैल, 1977 में अब तक दिल्ली में 25000 मलेरिया के केसिस हो गये हैं। यह गवर्नमेंट डिसपैंसरीज के आंकड़े हैं। प्राइवेट डाक्टरों के यहां जो इलाज करवाने जाते हैं उनके आंकड़े लिए जाएं तो वे इस से कई गुना ज्यादा होंगे। हमारी सरकार और जनता कितनी लापरवाह है उसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। दिल्ली में मलेरिया की बेसिक मेडिसिन प्राइमाक्वीनाइन और क्लोरोक्वींनाइन है। इन दोनों का बाजार में बिल्कुल अभाव है। जो सरकारी डिस्पेंसरीज हैं वहीं यह दवायें मिलती हैं, प्राइवेट डाक्टरों को नही मिलती हैं। यह दोनों दवायें मिला कर अगर दी जाती हैं तो मलेरिया हमेशा के लिए चला जाता है। लेकिन प्राइवेट डाक्टर केवल कुनीन से इलाज कर रहे हैं जिस से मलेरिया कुछ दिनों के लिए तो चला जाता है, लेकिन फिर उसका अटैक उस मरीज को हो जाता है। सरकार का ध्यान इस ओर नही गया।

सरकार ने 1976 में इसको समाप्त करने की योजना बनाई थी और प्रान्तीय सरकारों को आदेश भी दिये गये। परन्तु किसी प्रान्तीय सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और मलेरिया की गति उसी प्रकार से चल रही है।

दूसरी जो सबसे बड़ी लापरवाही है वह यह कि इंडियन काउन्सिल आफ़ मेडिकल रिचर्स का ध्यान अभी तक मलेरिया की ओर नही गया। उसका ध्यान गया परिवार नियोजन के लिए कोई दवा निकालें, फ़र्टीलिटी कंट्रोल, डिलिवरी सिस्टम और न्यूट्रिशन आदि पर ही गया और मलेरिया को कैसे रोका जाय, इसकी क्या दवा निकाली जाय इस पर काउन्सिल का कोई ध्यान नही गया। यही नही, जो हमारे पास दवा थी उसका भी सही प्रकार से प्रयोग नही हुआ और कांग्रेस सरकार की तमाम शक्ति केवल परिवार नियोजन पर ही लगी। जो मलेरिया में भी डाक्टर थे उन सब की भी यही ड्यूटी थी कि वह नसे काटें। इस लापरवाही का ही यह कुपरिणाम है। इसलिए मैं मंत्री महोदय से कहूंगा कि इस खतरे को आप भयंकर समझ कर युद्ध स्तर पर इसको रोकने के लिये समाप्त करने का आप काम करे। जो डी० डी० टी० अब तक इस्तेमाल होती रही वह कम मात्रा मे थी, और मच्छरो मे भी उसको सहन करने की ताकत आ गई है। इसलिए आप इंडियन काउन्सिल आफ मेडिकल रिसर्च से प्रार्थना करें कि वह डब्लू० एच० ओ० के साथ मिल कर मलेरिया को दूर करने के लिए कोई दवा निकाले। इस बीमारी से लड़ने के लिए केवल सरकार की मशीनरी काम कर सकेगी इसमें मुझे संदेह लगता है। आप इस काम को जिलाधिकारियों को भी सौंपे और जो आपके जिले में मेडिकल आफिसर्स हैं उनको भी कहें तब जा कर यह बीमारी जायगी।

जो आपने परीक्षणशाला केन्द्र बनाये हुए हैं उनमें जहां पर मच्छरों की जांच होती है उसका विकेन्द्रीकरण कीजिए और ज्यादा तादाद में प्रयोगशालाएं बनाइये ताकि केसेज को पकड़ा जा सके। समाचारपत्र,

[श्री ओम प्रकाश त्यागी]

रेडियो और दूरदर्शन की सहायता से आप जनता को इस बीमारी के खतरे से परिचित करावें कि वह कैसे बचें । इसके साथ साथ आपको यह भी ध्यान रखना है कि बांगला देश और पाकिस्तान से भी मच्छर आ जाते हैं, इसलिए उन दोनों देशों की सरकारों से भी आप सहयोग लें ताकि मलेरिया उन्मूलन का अभियान दोनों तरफ़ से चल सके ।

दिल्ली में मलेरिया केसेज बढ़ने का कारण यह भी है कि वहां बहुत वाटर लागिंग है और हर जगह तालाब भरे पड़े हुए है । दिल्ली ऐडमिनिस्ट्रेशन का ध्यान उधर नहीं गया है । इसके अलावा बड़ी-बड़ी कोठियां हैं, जहां गाय भैंस रखने की अनुमति है । उन लोगों के नौकर जहां उनके जी में आता है, गोबर फेंक देते हैं और वह गोबर सड़कों के किनारे पर पड़ा रहता है, जिससे वहां मच्छर पैदा होते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि आपके सैनिटरी इन्स्पैक्टर क्या करते रहते हैं ? सरकार इस तरफ ध्यान क्यों नहीं देती ?

सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए मैंने इस विषय को यहां उठाया है, मैं आशा करता हूं कि मंत्री महोदय किसी विशेष योजना का परिचय इस सदन में देंगे ताकि इस प्रकोप से हम लोग लड़ सकें ।

SHRI K. LAKKAPPA : (Tumkur) : Mr. Chairman, Sir, when Mr. Raj Narain the Health Minister took over this Ministry, I thought that people would become healthy and free from all the diseases and the nation would try to fight and eradicate diseases in this country. My friend has raised a very useful discussion on malaria. 10 percent of the population is affected by this disease now. I think the main problem this country is facing is that preventive methods are not fully operating in this country. First of all, there is no proper supply of drinking water in the villages. Health facilities and other basic amenities are lacking in the country. (*Interruptions*) It is no use saying all these things now and bringing out the faults of the previous Government, because I thought the moment the Janata Government comes into power, both milk and honey will flow through the same channel so that we can drink.

We forget this very serious problem which has spread in the county. National evaluation regarding malaria has not been made properly on a sound footing. Medical facilities for such diseases in various States and villages have not reached the people and there is at least one person affected by this disease in every family in every village.

Recently when I returned from my constituency I found that in about 3-5 taluk as more than 30 percent of people were suffering from malaria and there was no place in the hospitals with the result that admission was refused and the doctors were not attending on the patients. These days Medicine is not available ; even simple medicine is also not available We have got very ambitious programme and policy to evolve and eradicate malaria, but the medical facilities are not reaching the people who are affected very much by this disease.

Protected water should be provided in every village. This is one of the important aspects. Today, there is no protected water. There are States where so many families are effected. Certain measures should be taken to operate rigs for digging wells so that drinking water problem can be solved. For example, in Karnataka, in Tamil Nadu and other places, we cannot operate rigs because of paucity of funds.

MR. CHAIRMAN : You can only put a question and not make a speech.

SHRI K. LAKKAPPA : I have got a right to put questions. We are confronteed with shortage of medicines, lack of administrative facilities and shortage of doctors to meet the situation. I would like to know whether you are going to solve this problem on a war-footing, whether eradication of malaria will have a time- bound programmes whether a national programme will be evolved, so that by a particular point of time complete eradication of malaria will have been achieved by this Ministry. I want a categorical assurance from the Minister to this effect. Also I would like to know what are the shortcomings in this regard, why malaria is spreading throughout the country and what are the remedial measures that you have found in your wisdom in your Ministry. I want Mr. Raj Narain, who is heading the Health Ministry, to see that a complete

control of malaria is effected in the country. I want a categorical assurance from him in this regard.

SHRI GIRIDHAR GOMANGO (Koraput) : The Congress Government eradicated small pox from this country. I want to know whether this Government will assure us that they will eradicate malaria from this country for ever.

My second question is this. The medicine, that is, quinine, is in short supply in the country, and the reason for that is neglect of cultivation of cinchona plants. Also whatever quinine we are producing in this country is being exported. So, the medicine is not available in this country. I want to know whether Government will encourage cultivaion of cinchona plant so that the medicine will be avoilable in plenty in this country.

Malaria is a problem not only in towns but mostly in the rural areas, especially in the hill areas. Officers who are posted they are afraid to go to these areas. That is another reason why it has not been controlled. I want to know whether the Government will consider it as a national problem and will come forward to solve this, to eradicate malaria completely from this country, forever, as the Congress Government had eradicated small pox.

SHRI C.K. CHANDRAPPAN (Cannanore) : In the last decade Government had claimed that they had come to a stage when malaria had almost been eradicated. But now we are finding that malaria is again coming back. I want to know whether Government would consider taking steps to fight this growing mosquito menace in a new way. I hope, the Ministry is aware of the fact that it is due to the immunity developed by the mosquitoes that the chemical pesticide is no more sound to be effective. There was a suggestion made by some scientist that certain other kinds of insects could be developed which would eat away the mosquitoes and thereby even those mosquitoes which have developed immunity could be removed by this method. I want to know whether Government would consider some such new method, so that we may be able to wipe out this growing menace of mosquitoes which are now immune to chemical pesticides.

12 hrs.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण) : श्रीमन्, माननीय त्यागी जी ने तीन प्रश्नों के सम्बन्ध में उत्तर जानना चाहा है । राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम क्या है ? मलेरिया के बारे में विश्व-स्वास्थ्य संघ ने भारत को क्या चेतावनी दी है और मलेरिया उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले प्रयास क्या हैं ? मैं समझता हूं कि माननीय त्यागी जी के तीनों सवालों में जितने सम्मानित सदस्य विरोधी पक्ष के बोले हैं सभी का समावेश हो जाता है । हमारे मित्र लकप्पा ने यह जानना चाहा है कि विशेष कार्यक्रम क्या हैं ? तो आज हम ने एक नारा दिया है—एक घण्टा देश को । इस देश के सभी नागरिक अपने निजी कामों से अपने को हटा कर एक घण्टा देश को अवश्य दें और उस में पहला काम करें कि मलेरिया उन्मूलन के कार्यक्रम में लग जायें । एक घण्टा देश को—इस नारे को सब लोग हृदयंगम कर लें ।

सरकार इस सम्बन्ध में जो कुछ कर रही है उस का विवरण तो मैं दूंगा ही मगर मैं चाहूंगा कि सदन के सम्मानित सदस्य मलेरिया के इतिहास से भी परिचित हो जायें और मलेरिया कब बढ़ी, कब घटी और फिर कब बढ़ी और फिर कब घट रही है, इन सभी बातों को ध्यान में रखें ।

हमारे मित्र त्यागी जी ने थोड़ी सी ज्यादती की है । उन्होंने कहा—हमारी सरकार, हमारी सरकार ने कुछ नहीं किया । तो इस का मतलब तो हम से हो जाता है । .....

श्री ओम प्रकाश त्यागी : आप से नहीं, पहले वाली सरकार से मतलब था ।

श्री राज नारायण : इन को कहना चाहिए था कि पहले की सरकार, पुरानी सरकार, भूतपूर्व सरकार । कहने का मतलब इनका वही था लेकिन शब्द का प्रयोग गलत हो गया ।

[श्री राज नारायण]

तो मैं साल पढ़ देता हूं, आसानी से जिस से माननीय सदस्य समझ जायं कि किस साल में मलेरिया की क्या स्थिति है।

भारत में मलेरिया जन-स्वास्थ्य की एक प्रमुख समस्या चली आ रही है। अभी भी है। देश के विभाजन के बाद इस रोग से प्रति वर्ष 7.50 करोड़ व्यक्ति पीड़ित हुआ करते थे—त्यागी जी ने जो आंकड़े दिये हैं वे करीब करीब सही हैं—जिस में से प्रति वर्ष 8 लाख मौतें हो जाती थी। 7.5 करोड़ रोगी और 8 लाख मौत। राष्ट्रीय मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम 1953 में शुरू किया गया और इसे 1958 में उन्मूलन कार्यक्रम में बदल दिया गया उस समय किए गए प्रयत्नों के परिणामस्वरूप 1965 तक इस रोग से पीड़ित होने वालों की संख्या घट कर लगभग 1 लाख रह गई। अब 1965 माननीय सदस्य याद कर लें। यहां माननीय चौहान साहब से मैं कहूंगा कि खूंटा गाड़ दें—1965। अब 1966 से किस्त की रिजीम आ रही है उसे भी माननीय चौहान साहब ठीक से समझ लें क्योंकि माननीय चौहान साहब इस समय नेता विरोधी दल हैं हमारी वजह से और श्री जय प्रकाश नारायण ने भी उन से आज कुछ अपीलें की हैं। इसलिए मैं उन से निवेदन करना चाहता हूं कि 1966 के आते ही फिर मलेरिया प्रगति पर आ रही है। फिर भी विभिन्न प्रशासनिक, तकनीकी और वित्तीय कारणों के फलस्वरूप 1966 के बाद रोगियों की संख्या में वृद्धि होनी शुरू हो गई। वर्ष 1976 के दौरान लगभग 58.22 लाख मलेरिया के पाजिटिव रोगी थे जिनमें से 40 रोगियों की मौतें हुईं। अप्रैल, 1977 तक 6.54 लाख पाजिटिव रोगी हुए बताए गए हैं। रोगियों की संख्या में 1974 की तुलना में 1975 में लगभग 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई जब कि 1975 की तुलना में 1976 में लगभग 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यानी अब धीरे धीरे जब इमर्जेंसी पीरियड का 1976 वर्ष खत्म हो रहा है और जब भारत माता के सच्चे सपूतों की जेल से छूटने की तैयारी हो रही है तब मलेरिया भी धीरे-धीरे नीचे की तरफ जा रहा है।

देश भर में मलेरिया फैलने के मुख्य कारण क्या हैं उनकी ओर माननीय सदस्यों का ध्यान जाना चाहिए।

गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान की बस्तियों और बिहार, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा के छोटे-छोटे क्षेत्रों में, देहातों में सामान्यतः पाया जाने वाला मलेरिया रोग वाहक मच्छर "ए" किबलिसीफरोज में डी डी टी को हजम करने की शक्ति उत्पन्न हो गई है। मलेरिया के जो कीटाणु हैं वे अब डी डी टी को हजम कर लेते हैं। यानी कीटाणु की शक्ति बढ़ गई है और जो दवा है उस की शक्ति अब उन को मारने की नहीं रह गई है। इस के कारण भी मलेरिया देश में अपना प्रकोप दिखा रहा है। गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ स्थानीय क्षेत्रों में इस मच्छर में बी एच सी हजम करने की शक्ति भी देखने को मिली है। गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ भागों में लगभग तीन वर्ष तक प्रयोग करने के बाद 1973 से कुछ मच्छरों में मेलाथिन नामक एक और कीटनाशी दवाई हजम करने की शक्ति भी देखने को मिल रही है। यानी मलेरिया कीट-नाशक जितनी दवाइयां हैं उनको हजम करने की शक्ति धीरे धीरे मच्छरों में बढ़ती चली जा रही है।

फरवरी, 1977 के पहले जो सारी घटनाएं घटीं उन में सारी स्थिति देश की इस तरह से सामने आई।

तेल संकट के कारण कीटनाशक दवाइयों के मूल्य में वृद्धि और देश में तथा बाहर इन की कमी, यह भी एक कारण है।

राष्ट्रीय संचारी रोग संस्थान, दिल्ली और राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम द्वारा भारत के विभिन्न भागों में 1973 से किए गए अध्ययनों से यह पता चलता है कि असम, मेघालय और मिजोरम की कुछ बस्तियों में भी फाल्सिपेरम नामक परजीवी जो प्राय दिमाग पर प्रभाव डालता है में क्लोरोक्विन हजम करने की शक्ति विद्यमान है। यानी अब मलेरिया से दिमाग पर भी असर पडेगा ऐसी स्थिति पैदा हो रही है। मैं चाहता हू कि मलेरिया आने के पूर्व ही उसके जो प्रिवेंटिव मेजर्स हैं उन को लोग अख्त्यार करे।

कुछ क्षेत्रों मे जहा मलेरिया का उन्मूलन कर दिया गया था उनमे मलेरिया सम्बन्धी सतर्कता के अपर्याप्त कार्यकलापो के परिणाम-स्वरूप मलेरिया के रोगियो का देर से पता लगाया गया और समय पर उपचारात्मक उपाय बरतने मे देरी हो गई। अब ये सारे कार्यकलाप जो हुए है भूतपूर्व सरकार के शासन मे उस का मजा हम सब लोग पा रहे है क्योकि जो उपचारात्मक काम था वह किया ही नही गया। जो निरोधात्मक काम थे वे किए ही नही गए। 1966 से ले कर 1976 तक दस साल का समय चाहे इस को प्रगति के ग्यारह वर्ष कहिए या अवनति के 11 वर्ष कहिए यह माननीय सदस्यो के सब के सामने है और इस से वे पूरा अन्दाजा लगा लें। इधर-उधर जाने से कोई काम नही चलता है।

देश के कुछ भागो मे कीटनाशक दवाईयो के छिडकाव के तुरन्त बाद कीचड से पुताई करने के कारण छिडकाव की गुणकारिता पर प्रतिकूल प्रभाव पडा है। कही पर पुताई हुई और फिर उस पर कीचड आ गया तो जो कुछ पुताई का काम हुआ, वह खत्म हो गया।

प्रत्येक ने सोचा कि मलेरिया का लगभग उन्मूलन ही हो गया है, इसलिये प्रयासो मे ढील आ गई। लोग ओवर-कान्फिडेंट हो गए कि मलेरिया का उन्मूलन हो गया, अब वह आएगा ही नहीं। लेकिन मलेरिया रह गया था, उस के कारणों को जानने की कोशिश ही नही की गई, इस तरह से 10-11 वर्ष बिल्कुल बरबाद कर दिए गए और आज देश को मलेरिया के गाल मे झोंक दिया गया।

कार्यक्रम के आरम्भ मे जब डी०डी०टी का इस्तेमाल किया गया तो इस से खटमल, छिपकलिया, तिलचट्टे और बिच्छू आदि मर जाते थे। अत लोग डी० डी० टी के छिडकाव को तत्परता से स्वीकार करते थे। किन्तु कुछ समय बीत जाने पर ये कीडे आदि डी० डी० टी को हजम करने वाले जीव बन गए और इसलिए लोगो का यह मत बन गया कि डी० डी० टी० प्रभावकारी नही है। जो लोग जेलो मे रहे है—जैसे हम लोग जेलो मे थे तो वहा छिडकाव करते थे, लेकिन छिडकाव के बाद देखते थे कि जो स्थिति पहले थी, वही स्थिति रहती थी।

श्री हीरा भाई : (बासवाडा) यह भी तो हो सकता है कि डी० डी० टी० असली के बजाय नकली हो।

श्री राज नारायण . हम उस पर भी आ रहे हैं। सम्मानित सदस्यों के मस्तिष्क और मन मे जितने प्रश्न उठते हैं, सब की जानकारी हम को है, इसलिए सब की जानकारी हम करा देते हैं।

हमारे मित्र लकप्पा को अच्छी तरह से मलेरिया के प्रकोप का पता चल गया होता, यदि 26 जून, 1975 के बाद दो महीने तक जेल मे रह लिए होते

SHRI K LAKKAPPA We were together You have forgotten.

SHRI RAJ NARAIN : You were with me, no doubt. Do not talk like this, but you left us

[श्री राज नारायण]

मलेरिया केवल भारत मे ही फिर से नहीं हुआ है, यह तो विश्व भर मे ऐसे ही हुआ है, जिसके कारण ऊपर कहे जा चुके हैं। श्री लंका जैसे देश ने मलेरिया का लगभग उन्मूलन कर दिया था, किन्तु इस समय वहां मलेरिया फिर से जोर पकड गया है। दक्षिण पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका के सभी देशो मे यही समस्या है। अमरीका में कोई भी उन्मूलन कार्यक्रम नही चलाया गया जहां मलेरिया की समस्या अत्यधिक गम्भीर बनी हुई है।

मैं सदन के सम्मानित सदस्यो को बतला दू—आज ही हम से तीन बजे अमरीकी अम्बेसेडर से बातचीत हुई। मलेरिया से वे भी बहुत चिन्तित हैं। उन्होंने पूछा कि आप अपने देश मे मलेरिया के उन्मूलन के लिए क्या योजना बना रहे है। मैं आप को पूरी बाते बता देना चाहता हू—इस में कोई चीज छिपाने की नही है। जनता पार्टी की सरकार जनता से कोई बात नही छिपायेगी। हम बराबर कहते रहे है कि यह लोक सभा है—जिसमे लोक की आकांक्षायें प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। अगर हम खुद कोई चीज छिपायेंगे तो हमने जो 25 साल की पार्लियामेन्ट्री लाइफ मे बराबर माग की है, उन मागो को समझना चाहिए कि हमारी मांगे नकली थीं। इस लिए हम किसी से कोई बात छिपाना नहीं चाहते, चाहे उसके लिए हमें कुछ भी मेहनत करनी पडे।

सभापति महोदय : अब आप समाप्त करे।

श्री राज नारायण : मैं निवेदन करूगा कि सम्मानित सदस्यो ने जो प्रश्न किए है, कम से कम उन का उत्तर देने का मुझे मौका देंगे। यदि आप पहले से ऐसा प्रतिबन्ध लगाए होते तो आधे घण्टे के अन्दर यह खत्म हो गया होता, लेकिन सम्मानित सदस्यो ने प्रश्न की जगह लेक्चर देना शुरू किया, किसी ने दस मिनट, किसी ने 15 मिनट ले लिए, तो यह सारा दोष हमारे ऊपर नही आएगा। हम क्या उपाय करने जा रहे है, अब मैं आपको उन के बारे मे बताता हू। जो उपाय इस की रोक-थाम के लिए हम कर रहे है, वे इस प्रकार है.

भारत सरकार ने इस रोग के नियंत्रण के लिए एक सशोधित कार्य योजना अनुमोदित कर दी है और उसे 1-4-77 से चलाया जा रहा है।

लकप्पा जी, देखिए। सदन के डेकोरम के लिए यह आवश्यक है कि सम्मानित सदस्यो का मुह बराबर चैयर की ओर रहे। यह नही कि चैयर की ओर पीठ कर दी और मुह पीछे कर दिया। अब जो मूल चीज है, वह मैं बताने जा रहा हू।

SHRI K. LAKKAPPA: I do respect Shri Raj Narain. He is an elderly person.

श्री राज नारायण : मै यह बता रहा था कि भारत सरकार ने इस रोग के नियत्रण के लिए एक सशोधित कार्य योजना अनुमोदित कर दी है और उसे 1-4-77 से चलाया जा रहा है।

राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम की वर्तमान यूनिटो को जिले की भौगोलिक सीमा के अनुरूप पुनर्गठित किया गया है जैसा माननीय सदस्य त्यागी जी ने मांग की थी। पहले इस कार्यक्रम मे जिलो के मुख्य चिकित्सा अधिकारियो को शामिल नही किया गया था किन्तु पुनर्गठन के कारण वे जिले मे इस कार्यक्रम के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराए गए हैं। अब उन को जिम्मेदार बना दिया गया है जब कि पहली सरकार ने ऐसा नही किया था।

राज्यो को विभिन्न कीटनाशी दवाइयां और अधिक मात्रा मे सप्लाई की जा रही

है। जहां वेक्टर में डी० डी० टी० को हजम करने की शक्ति पैदा हो गई है वहां पर यूनिटों को वैकल्पिक कीटनाशी दवाइया भी सप्लाई की जा रही हैं।

इस कार्यक्रम के इतिहास मे पहली बार क्लोरोक्विन नामक लगभग 50 करोड़ जीवन रक्षक गोलिया सप्लाई की गई है जब कि पहले 20 करोड़ गोलियां सप्लाई की गई थी। केवल मलेरिया कार्यकर्त ही इन गोलियों को मुफ्त नही बाट रहे हैं बल्कि बहुत से स्थानों पर पंचायतें तथा स्कूल के अध्यापक और अन्य स्वैच्छिक एजेन्सियां भी इन का वितरण कर रही है। यह इस सरकार का कार्य है। इसी सरकार ने इस सदन के सम्मानित सदस्यो के द्वारा और इस सदन के द्वारा देश की आम जनता से अपील की है कि वह एक घण्टा देश को दे और मलेरिया का उन्मूलन करे। मलेरिया के उन्मूलन के बाद फिर वे एक घण्टा देश को दे और नहरें खोदे, बाग लगाए, देश की पैदावार बढाएं और राष्ट्रीय विकास के सारे कार्यों के लिए देश के सभी लोग अपना एक घण्टा अवश्य दे।

श्रीमती प्रेमलताबाई चव्हाण (कराड): माननीय मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि आप के पास जो ये स्टेटिस्टिक्स आए हैं कि इतनी दवाइयां दी गई है, मेरी ऐसी जानकारी है कि वे अभी वहा पहुची नही है। उसके लिए सरकार क्या इलाज कर रही है?

श्री राज नारायण: माननीय सम्मानित सदस्या अगर किसी विशेष स्थान के बारे में हमें बताएं, तो वहां पर इस की कमी को दूर करने की पूरी कोशिश करेंगे।

अब समझ लीजिए, केवल मलेरिया कार्यकर्ता ही इस में नहीं लगे हैं। स्कूल के अध्यापक, स्कूलों के बच्चे, पंचायतों के सेक्रेटरी, पंचायतों के सदस्य और सभापति सभी से अपील की गई है कि वे इस कार्य में पूरी शक्ति के साथ अपनी ताकत और सामर्थ्य के साथ जुट जाएं। इस के अतिरिक्त सारे देश मे लगभग 50 करोड गोलिया केमिस्टों की दुकानो पर भी उपलब्ध की गई है। गांवों में सिर दर्द की दवाई के रूप में किराने की छोटी दुकानो पर इसे उपलब्ध करने के लिए कदम उठाये जा रहे है।

जहा परजीवी पर क्लोरोक्विन का प्रभाव नही होता, वहा पुरानी कुनीन इस्तेमाल की जा रही है जिसकी सप्लाई पर्याप्त मात्रा मे की गई है। बहुत काफी मात्रा मे जो पहले लोग इसे देते थे, उसकी सप्लाई का इन्तजाम कर दिया गया है।

इस रोग के पुनरावर्तन की रोकथाम के लिए प्रिमक्विन का इस्तेमाल किया जाता है भले ही यह एक जीवन रक्षक औषधि नही है। राज्यो को यह दवाई पर्याप्त मात्रा मे सप्लाई की गई है। चूंकि इस दवाई से कई बार रोगी पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। इसलिए बाजार मे इसकी बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। अब इस दवाई को केमिस्ट की दुकानो पर उपलब्ध करने के उपाय किये जा रहे है।

शहरी मलेरिया कार्यक्रम के अन्तर्गत मलेरिया-रोधी कार्यों को तेज कर दिया गया है। वर्तमान 28 कस्बों के अलावा यह योजना 1-4-77 से 38 और कस्बो मे आरम्भ कर दी गई है।

आप चाहेंगे तो हम इन कस्बों के नाम भी बता देंगे।

क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं के निरीक्षण को और सुदृढ़ कर दिया गया है।

[श्री राज नारायण]

मलेरिया उन्मूलन कार्य के क्षेत्र में बुनियादी और आपरेशनल अनुसंधान करने के लिए उपाय किए गये हैं।

ब्लड स्मीयर की शीघ्र जांच करने और मलेरिया के पाजिटिव रोगियों का उपचार करने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में भी प्रयोगशाला सम्बन्धी सेवाएं उपलब्ध कर दी गई है।

इसके साथ साथ मैं देश में मलेरिया से पीड़ित होने वाले व्यक्तियों की 1962 से संख्या दे रहा हूं —

वर्ष	संख्या
1962	59575
1963	87306
1964	112942
1965	100185
1966	148156
1967	278621
1968	274881
1969	348647
1970	694647
1971	1322398
1972	1428649

इस 1971, 1972 में कांग्रेस का अजय बहुमत आ गया। अब अजय बहुमत आ गया तो किस द्रुतगति से मलेरिया रोगियों की तादाद बढ़ी इसको देखा जाए —

1973	1930273
1974	3167658
1975	5166142
1976 (अनन्तिम)	5821734

1977 में अब हम आ रहे है। हमें आये चार महीने बीते हैं। इन चार महीनों में मलेरिया से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या है 654903 यानी साल के एक तिहाई भाग में, क्योंकि साल के अभी आठ महीने बाकी हैं, यह संख्या है। अगर इसको तिगुना कर दिया जाए तो यह लगभग 18 लाख संख्या बनती है। हमने जो मलेरिया को रोकने के उपाय किये हैं उनसे इस संख्या में और कमी आएगी। कहां संख्या पिछले साल में 58 लाख थी, कहां अब यह संख्या 18 लाख तक ही जाएगी। यह है जनता पार्टी सरकार की उपादेयता।

इन उपर्युक्त तथ्यों से यह देखने में आएगा कि मलेरिया के प्रकोप को उल्लेखनीय मात्रा में घटाने में मिली प्रारम्भिक सफलता के बाद इस कार्यक्रम में फिर व्यवधान खड़े हो गए।

ये जो व्यवधान खड़े हुए हैं, ये खड़े न हों, इसके लिए हमें बहुत की चिंताएं हैं और हम इन व्यवधानों को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। 1976 में रोगियों की जो संख्या थी, वास्तव में उस पर काबू पा लिया गया है। इसे हम आगे बढ़ने नहीं दे रहे हैं।

1969 से 1971 तक ऐसे रोगियों की संख्या बढ़ती हो गई थी परन्तु समय पर कीटनाशक दवाइयों की पूर्ति और

छिड़काव कार्य शुरू किये जाने से 1972 में इस संख्या को आगे नहीं बढ़ने दिया गया ।

अब मरने वालों की संख्या सुनिये ।

SHRI DHIRENDRANATH BASU (Katwa) : Sir, the Minister has already replied to all the points. And he has made a brilliant speech. I think you should now adjourn the House.

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा (रामपुर) : ब्लड टैस्ट के उपरान्त जहां पर मलेरिया के केसिज मिलते हैं वहीं पर छिड़काव या स्प्रे का निदेश दिया जाता है । मेरा अनुरोध है कि जिस तरह से मलेरिया का प्रकोप बढ़ रहा है उसको देखते हुए किसी विशेष स्थान को निर्धारित न करके सब स्थानों पर स्प्रे किया जाए ताकि मलेरिया पर एक दम रोक लग सके । क्या आप ऐसा करवाएंगे ?

श्री राज नारायण : मैं आपकी राय से सहमत हूं । मैं अपना ही केस देता हूं । हमारा रक्त लगभग तीन दिन पहले लिया गया था । लेकिन यह तब लिया गया जबकि हमारा बुखार उतर गया था । बुखार उतर जाने के बाद भी रक्त लिया जाएगा तो मलेरिया है या नहीं इसका पता नहीं चल सकता है । इसलिए हम इस बात की कोशिश करेंगे कि जहां रक्त में मलेरिया के कीटाणुओं का पता न चले, इस वास्ते चूंकि मलेरिया बढ़ रहा है और उम्मीद की जा रही है कि मलेरिया का रोग बाहर से भी आ रहा है, इस वास्ते हम प्रयत्नशील हो कर जहां जहां हमें महसूस हो कि मलेरिया बढ़ रहा है, चाहे रक्त में कीटाणुओं का संकेत मिले या न मिले, वहां भी छिड़काव की व्यवस्था करवाएंगे ।

सभापति महोदय : राज नारायण जी, हाउस का समाधान हो गया है ।

श्री राज नाराराण : तब ठीक है । मैं समाप्त करता हूं ।

सभापति महोदय : अब हम एड जर्न होते हैं और कल मिलेंगे ।

13.26 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, July 20, 1977/Asadha 29, 1899 (Saka).

MGIPMRND -SI—JC 2288—3-9-77—980—